पाठ – 5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

संक्षेप में लिखे

Q1. निम्नलिखित के कारण दें-

(क) वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 के बाद आई |

(ख) मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुले आम प्रशंसा की |

(ग) रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलवीं सदी के मध्य से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी |

(घ) महात्मा गांधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है|

उत्तर- (क) वुडब्लॉक प्रिंट का आविष्कार चीन में छठी शताब्दी के आसपास हुआ था। यह मार्को पोलो के साथ 1295 में यूरोप में आया। मार्को पोलो चीन में कई वर्षों की खोज के बाद इटली लौटे और उन्होंने अपनी वापसी पर वुडब्लॉक प्रिंट का ज्ञान अपने साथ लाया।

(ख) मार्टिन लूथर प्रिंट के पक्ष में थे और इसकी प्रशंसा में बोलते थे क्योंकि प्रिंट मीडिया ने अपने विचारों को लोकप्रिय बनाने और फैलाने में मदद की। 1517 में, उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च की प्रथाओं और रीति-रिवाज़ों की आलोचना करते हुए नब्बे फाइव थिसिस लिखा। इन लेखन को तुरंत बड़ी संख्या में पुन: प्रस्तुत किया गया और व्यापक रूप से पढ़ा गया। न्यू टेस्टामेंट के उनके अनुवाद को भी हजारों लोगों ने स्वीकार किया और पढ़ा। यह केवल प्रिंट तकनीक में सुधार के कारण ही संभव हो पाया था, जिसने कामकाजी वर्गों को पुस्तकों तक पहुंच प्राप्त करने की अनुमति दी थी।

(ग) रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलहवीं शताब्दी के मध्य से निषिद्ध पुस्तकों का एक सूचकांक रखना शुरू कर दिया क्योंकि इसके अधिकार को कई व्यक्तिगत और विशिष्ट रीडिंग और विश्वास के सवालों द्वारा आसानी से सुलभ लोकप्रिय धार्मिक साहित्य द्वारा खतरे में डाल दिया गया था। इसके कैथोलिक चर्च ने जिज्ञासु विचारों और इसके दमन के पूरक के लिए, प्रकाशकों और बुकसेलरों पर कठोर नियंत्रण किया, और 1558 से प्रतिबंधित पुस्तकों का सूचकांक भी रखना शुरू किया।

(घ) गांधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई भाषण की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और संघ की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई है क्योंकि वह इन्हें अभिव्यक्ति और जन मानस की साधना का सशक्त माध्यम मानते थे। इन स्वतंत्रताओं का खंडन स्व-शासन और स्वतंत्रता के विचार के अनुकूल नहीं था। इसलिए, उसके अनुसार इन स्वतंत्रता के लिए लड़ाई, स्वराज या स्व शासन के लिए आंतरिक रूप से लड़ाई थी।

Q2. छोटी टिप्पणी में इनके बारे में बताएं-

(क) गुटेनबर्ग प्रेस

(ख) छपी किताब को लेकर इरैस्मस के विचार

(ग) वर्नाक्यूलर या देसी प्रेस एक्ट

उत्तर- (क) गुटेनबर्ग प्रेस: इसकी स्थापना जोहान गुटेनबर्ग ने की थी। 1448 तक, उन्होंने समकालीन तकनीकी नवाचारों का उपयोग करते हुए, जैतून और वाइन प्रेस के साथ मुद्रण की प्रणाली को पूरा किया था। पहली किताब जो उन्होंने छापी वह थी बाइबल, 3 साल में 180 प्रतियाँ। हालाँकि इन पुस्तकों को मुद्रित किया गया था, लेकिन सामने के पृष्ठ, प्रबुद्ध सीमाओं और क्रेता-निर्दिष्ट डिज़ाइनों की हस्तनिर्मित सजावट में एक अनूठा स्पर्श बना रहा। गुटेनबर्ग प्रेस 1430 के दशक में पहला ज्ञात प्रिंटिंग प्रेस था।

(ख) इरैस्मस के मुद्रित पुस्तक के विचार: वह प्रिंट माध्यम के आलोचक थे। उनका मानना था कि हालांकि कुछ पुस्तकें सार्थक ज्ञान प्रदान करती हैं, लेकिन अन्य केवल छात्रवृत्ति के लिए एक प्रतिबंध हैं। इरास्मस ने उन पुस्तकों को प्रकाशित करने का आरोप लगाया, जो महज त्रासद नहीं थीं, बल्कि "मूर्ख, निंदनीय, निंदनीय, असभ्य, अधार्मिक और देशद्रोही" थीं। उन्होंने यह भी महसूस किया कि बड़ी संख्या में ऐसी किताबें गुणवत्ता लेखन के मूल्य को कम करती हैं।

(ग) वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट: आइरिश प्रेस लॉज़ पर आधारित, इसे 1878 में पारित किया गया था। इस कानून ने सरकार को वर्नाक्यूलर प्रेस में सेंसर रिपोर्ट और संपादकीय के लिए अत्याचारी अधिकार दिए। यदि एक देशद्रोही रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी और अखबार ने शुरुआती चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया था, तो प्रेस को जब्त कर लिया गया था और प्रिंटिंग मशीनरी को जब्त कर लिया गया था। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूर्ण उल्लंघन था।

Q3. 19 वीं सदी में भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार का इनके लिए क्या मतलब था

(क) महिलाएं

(ख) गरीब जनता

(ग) सुधारक

उत्तर- (क) महिलाएं: उन्नीसवीं शताब्दी के भारत में प्रिंट संस्कृति के प्रसार ने महिलाओं के लिए शैक्षिक सुधार लाए। उदार पति और पिता ने अपने महिलाओं को घर पर शिक्षित किया या उन्हें महिलाओं के लिए स्कूलों में भेजा। जो महिलाएं पीढ़ियों से घरेलू जीवन तक सीमित थीं, अब उन्हें मनोरंजन का एक नया माध्यम मिल गया है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और साक्षरता के पक्ष में, पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना भी शुरू किया। कुछ ने किताबें भी लिखीं; राशसुंदरी देवी की आत्मकथा "अमर जीवन" पहली पूर्ण आत्मकथा थी, जिसे 1876 में प्रकाशित किया गया था। परंपरावादियों का मानना था कि शिक्षा और पठन महिलाओं को विधवा बना देगा, या उन्हें भ्रष्ट कर देगा। कई महिलाओं ने ऐसे परंपरावादी वातावरण में गुप्त रूप से पढ़ना और लिखना सीखा।

(ख) गरीब जनता : कम कीमत की पुस्तकों और सार्वजनिक पुस्तकालयों की उपलब्धता के कारण भारत में प्रिंट संस्कृति के प्रसार से उन्हें लाभ हुआ। जातिगत भेदभाव और उसके निहित अन्याय के खिलाफ ज्ञानवर्धक निबंध लिखे गए। इन्हें देशभर के लोगों ने पढ़ा था। समाज सुधारकों के प्रोत्साहन और समर्थन पर, अधिक काम करने वाले कारखाने के श्रमिकों ने स्व-शिक्षा के लिए पुस्तकालय स्थापित किए, और उनमें से कुछ ने अपने स्वयं के कार्यों को भी प्रकाशित किया, उदाहरण के लिए, काशीबाबा |

(ग) सुधारक: प्रिंट संस्कृति की लोकप्रियता सामाजिक और धार्मिक सुधारकों के लिए एक लाभ थी क्योंकि वे अब अपनी राय अखबारों और पुस्तकों के माध्यम से, आम जनता में फैला सकते थे। इन विचारों पर लोगों के विभिन्न समूहों द्वारा बहस की जा सकती है। आम लोगों की स्थानीय, रोज़मर्रा की भाषाओं में सुधारवादी विचारों को आगे रखा गया ताकि उसी के लिए एक व्यापक मंच बनाया जा सके।

चर्चा करे

Q1. 18 वीं सदी के यूरोप में कुछ लोग को क्यों ऐसा लगता था कि मुद्रण संस्कृति से निरंकुशवाद का अंत और ज्ञानोदय होगा ?

उत्तर- 18 वीं सदी के यूरोप में कुछ लोगों ने सोचा था कि प्रिंट संस्कृति आत्मज्ञान लाएगी और निराशा को समाप्त करेगी। इसकी आसान और सस्ती उपलब्धता का मतलब था कि साक्षरता अब उच्च वर्गों तक सीमित नहीं रहेगी। जबकि पादरी और राजाओं को इस बात की आशंका थी कि एक विशाल पठन जनता को लाभ होगा, मार्टिन लूथर जैसे सुधारकों ने परिवर्तन का स्वागत किया। उन्हें लगा कि यह शासकों की विचारधारा के अंधे पालन का अंत होगा। यह फ्रांसीसी क्रांति में भी देखा जा सकता है। प्रिंट माध्यम ने स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के आदर्शों को रूसो और वोल्टेयर द्वारा उनके लेखन में जनता तक पहुंचने की अनुमति दी। इसने संवाद और बहस की एक नई संस्कृति का निर्माण किया जिसने श्रमिक वर्ग को सामाजिक रीति-रिवाजों और मानदंडों का मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन करने की पहल की। कारण यह है कि जनता ने सामाजिक सुधार की पहल की, और निरंकुशता का अंत किया।

Q2. कुछ लोग किताबों की सुलभता को लेकर चिंतित क्यों थे ? यूरोप और भारत से एक-एक उदाहरण लेकर समझाएँ।

उत्तर- मुद्रित किताबों को लेकर कुछ लोग खुश नहीं थे। जिन लोगों ने इसका स्वागत किया था उनके मन में भी कई तरह का डर था। कई लोगों को छपी किताब के व्यापक प्रसार और छपे शब्द की सुगमता को लेकर कई आशंकाएँ थीं कि न जाने इसका आम लोगों के जीवन पर क्या असर होगा। किताबों की सुलभता के प्रति चिंतित वर्ग का मानना था कि किताबों से लोगों में बागी और अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे तथा मूल्यवान साहित्य की सत्ता समाप्त हो जाएगी। इस वर्ग में धर्मगुरु, सम्राट, लेखक और कलाकार आदि शामिल थे। यह किताबों की सुलभता का ही परिणाम था कि सामान्य लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। इससे ईसाई धर्म में प्रोटेस्टेंट विचारधारा का उदय हुआ। जिसे कैथोलिक शाखा ने चुनौती के रूप में देखा। धर्मगुरु इसे 'धर्म विरोधी' मानते थे। ज्योंही बाइबिल, ईश्वर और सृष्टि के नए अर्थ सामने आए धर्मगुरुओं के कान खड़े हो गए। प्रकाशकों पर पाबंदी लगाई गई, पुस्तकों को प्रतिबंधित किया गया तथा लेखकों को 'धर्म की सुरक्षा के नाम पर मौत की सजा दी गई। भारत में ब्रिटिश शासन ने पुस्तकों

को ब्रिटिश राज के खिलाफ एक गंभीर चुनौती के रूप में देखा अंग्रेजों का यह मानना था कि पुस्तकें, ब्रिटिश विरोधी विचारों को जन्म देगी। अतः पुस्तकों के मुद्रण एवं वितरण पर पाबंदियाँ लगाई गई।

Q3. 19 वी सदी में भारत में गरीब जनता पर मुद्रण संस्कृति का क्या असर हुआ ?

उत्तर- गरीब लोगों को कम कीमत की पुस्तकों और सार्वजनिक पुस्तकालयों की उपलब्धता के कारण भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार से लाभ हुआ। जातिगत भेदभाव और उसके निहित अन्याय के खिलाफ ज्ञानवर्धक निबंध लिखे गए। इन्हें देशभर के लोगों ने पढ़ा था। समाज सुधारकों के प्रोत्साहन और समर्थन पर, अधिक काम करने वाले कारखाने के श्रमिकों ने स्व-शिक्षा के लिए पुस्तकालय स्थापित किए, और उनमें से कुछ ने अपने स्वयं के कार्यों को भी प्रकाशित किया, उदाहरण के लिए, काशीबाबा और उनके "छोटे और बडे का सांवल"।

Q4. मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में क्या मदद की?

उत्तर- प्रिंट संस्कृति ने राष्ट्रवादी आदर्शों और स्वतंत्रता और समानता के विचारों को जन-जन तक आसानी से पहुँचाकर भारत में राष्ट्रवाद के विकास में सहायता की। समाज सुधारक अब अखबारों में अपनी राय छाप सकते हैं, जिससे सार्वजनिक बहस छिड़ गई। कारण की शक्ति ने आम लोगों को औपनिवेशिक सत्ता के अधिकार पर सवाल उठाया। दिलचस्प बात यह है कि जब अंग्रेजों ने प्रिंट मीडिया को सेंसर करने और नियंत्रित करने की कोशिश की, तब देश में हर जगह राष्ट्रवादी अखबार संख्या में बढ़ गए। उन्होंने औपनिवेशिक कुशासन की सूचना दी और लोगों को राष्ट्रवादी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उपनिवेशवाद-विरोधी प्रकाशनों को रोकने की कोशिशों से उग्रवादी विरोध भी हुआ।

परियोजना कार्य

Q1. पिछले सौ साल में मुद्रण संस्कृति में हुए अन्य बदलावों का पता लगाएँ। फिर इनके बारे में यह बताते हुए लिखें कि ये क्यों हुए और इसके कौन-से नतीजे हुए?

उत्तर शिक्षक की सहायता से विद्यार्थी इसे स्वयं करें।